Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

२१
वि०
१०४

* अथ *

चित्रगुप्त यमद्वितीया कथा

भाषा टीका सहिता

* प्रारम्भः *

प्रकाशक-फर्म बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर,

सन् १९४९ राजादरवाजा बनारस सिटी। मूल्य ।)

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पूजा सामग्री

बही, खाता
कलम
दवात
पेन्सिल

शुद्ध जल

दक्षिणा ₹1/

चावल
~~सुपारी~~ को ३४ ढेरियों पर

रोली
चावल
फूल, माला
धूप
दीपक
मिठाई
पान
सुपारी
फल
नारियल
कलावा
कपूर

२) दम, चित्रगुप्त की पूजा करना चाहिए —

३) चण्डी, सरस्वती, गणेश की पूजा करने के बाद

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

❀ श्रीगणेशाय नमः ❀

अथ चित्रगुप्तयमद्वितीया कथा प्रारम्भः ।

चित्रगुप्त समागच्छ धर्मराजान्तिकादिह । लेखनी कटनी हस्त चित्रगुप्त नमोस्तुते ॥ १ ॥ स्वर्णसिंहासनंचारु प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ इति आसनम् ॥ दूर्वाचन्दनपुष्पं च तीर्थतोयाभिमन्त्रितम् ॥ अर्घं चैवमयादत्तं चित्रगुप्त नमोस्तुते ॥ २ ॥ इति अर्घ्यम् ॥ श्रीखंडं चंदनंदिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं गृहाणेदं कृत्याकृत्य विचारक ॥ इति चन्दनम् ॥ ३ ॥ इदं पुष्पं गृहाण त्वं सुगन्धं सुमनोहरम् । ब्रह्मकायसमुद्भूतं

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

चि चित्रगुप्तनमोस्तुते ॥ इति पुष्पम् ॥ ४ ॥ धूपंगुग्गुलसंयुक्तं गन्धाढ्यंघृतपूरितम् । आघ्रेयंसर्वदेवानां चित्रगुप्त नमोस्तुते ॥ इति धूपम् ॥ ५ ॥ दीपंवर्तिसमायुक्तं घृतेनपरिपूरितम् । ज्योतिषामुत्तमंध्वान्तनाशनंप्रतिगृह्यताम् । इति दीपम् ॥ ६ ॥ आरक्तयुगलंवस्त्रं युगधर्मप्रवर्तकम् । आच्छादनं गृहाणेदंचित्रगुप्त नमोस्तुते ॥ इतिवस्त्रम् ॥ ७ ॥ नैवेद्यंफलपक्वान्नं गुडाद्यैश्च समन्वितम् । ईप्सितंचवरंदेहि परत्रेहशुभांगतिम् ॥ इति नैवेद्यम् ॥ ८ ॥ नागवल्लिदलैर्युक्तं पूंगीफलसमन्वितम् । दक्षिणाभिश्चसंयुक्तं चित्रगुप्त नमोस्तुते ॥ इतितांबूलपूंगीफलं दक्षिणा ॥ क. २

॥ इति पूजाविधिः समाप्तः ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

श्रीभीष्मपितामह ने श्री पुलस्त्य जी से पूछा कि हे महामुने ! इस लोक में 'कायस्थ' इस नाम से विख्यात जो पुरुष हैं वे किसके वंशमें उत्पन्न हैं और किस वर्ण में कहे जाते हैं ॥ १ ॥ हे महामुने यह कथा सुनने की मेरी इच्छा

अथ कथा प्रारम्भः ॥ श्रीभीष्म उवाच ।
कायस्था इतियल्लोके ख्याताश्चैव महामुने ।
कस्यवंशसमुद् भूतो कस्मिन्वर्णे च कथ्यते ॥ १ ॥
तमहंश्रोतुमिच्छामि कथ्यतां भो महामुने ।
एतन्मे संशयं ब्रह्मन् छेत्तुमर्हस्यशेषतः ॥ २ ॥

है इस सन्देह को दूर करने को आप सब भाँति समर्थ हैं । इस लिये आप कृपा करके इस पुनीत कथा को वर्णन करिये ॥ २ ॥ इस भाँति से पूछे गये मुनि

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पुलस्त्य जी प्रसन्न मन होकर गंगाजी के पुत्र पवित्र भीष्म पितामह जी से बोले कि हे गांगेय ! कायस्थोत्पत्ति मैं आपसे वर्णन करता हूँ ॥ ३ ॥ जिसको आपने

इति पृष्टो मुनिः प्राह गांगेयं शुचिविग्रहम् ।

पुलस्त्य उवाच ।

शृणु गाङ्गेय वक्ष्यामि कायस्थोत्पत्तिकारणम् ॥ ३ ॥
न श्रुतं यत्त्वयापूर्वं तन्मे निगदतः शृणु ।
येनेदंसकलं विश्वं स्थावरं जंगमादिकम् ॥ ४ ॥
उत्पाद्य पाल्यते भूयो निधनाय प्रकल्प्यते ।

अबतक नहीं सुना उसीको कहता हूँ । जिसने इस चराचरात्मक जगत को ॥ ४ ॥ उत्पन्न करके पालन किया और करता है फिर वही नाश करेगा एतत्सर्व अव्यक्त

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

और शान्त पुरुष लोक पितामह ब्रह्मा ने ॥ ५ ॥ जिस भाँति पूर्वही इस संसार की कल्पना की है वही वर्णन करता हूँ । मुख से ब्राह्मण बाहु से क्षत्रिय ॥ ६ ॥

अव्यक्तः पुरुषः शान्तो ब्रह्मलोकपितामहः ॥ ५ ॥
यथासृजत्पुराविश्वं कथयामि च तं प्रभो ।
मुखतो ब्राह्मणा जाता बाहुभ्यां क्षत्रियास्तथा ॥ ६ ॥
ऊरुभ्यां च तथा वैश्याः पद्भ्यां शूद्राः समुद्भवाः ।
द्विचतुः षट्पदादिश्च सर्वजीवान् सरीसृपान् ॥ ७ ॥
एककालेऽसृजद् ब्रह्मा चन्द्रसूर्यग्रहास्तथा ।

जंघा से वैश्य, पैर से शूद्र । इसी भाँति दो पाँव, चार पाँव, छः पाँव वालों आदि को लेकर समस्त सर्पादि जीवों को ॥ ७ ॥ एकही काल में चन्द्र, सूर्यादि ग्रहों

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

को और [illegible] बहुत जीवों को उत्पन्न करके हे भारत ! ब्रह्मा ने ॥ ८ ॥ सूर्य सम तेजधारी ज्येष्ठ पुत्र को बुलाकर कहा कि हे सुव्रत ! यत्न पूर्वक इस जगत की

एवं बहुविधं तत्र विश्वं सृत्पाद्य भारत ॥ ८ ॥
सुतं ज्येष्ठं समाहूय सूर्यं प्रमिततेजसम् ।
प्रतिपालय यत्नेन जगत्सर्वञ्च सुव्रत ॥ ९ ॥
इत्याज्ञाप्य सुतं ज्येष्ठं सृष्टिपालनहेतुकम् ।
ततस्तु ब्रह्मणा तेन यत्कृतं तं निशामय ॥ १० ॥
दशवर्ष सहस्राणि दशवर्षशतानि च ।

रक्षा करो ॥ ९ ॥ सृष्टि पालन हेतु ज्येष्ठ पुत्र को आज्ञा देकर जो ब्रह्मा ने किया उसे आप सुनिये ॥ १० ॥ एकाग्रचित्त होकर ब्रह्मा ने दश हजार दश सौ वर्ष

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

समाधि लगाई अन्त में विश्रान्त चित्त हुये ॥ ११ ॥ जब ब्रह्मा विश्रान्त चित्त हुये तब जो हुआ सो आप से कहता हूँ उन ब्रह्मा के शरीर से बड़े बड़े भुजाओं वाले

समाधिमगमद् ब्रह्मा ततो विश्रान्तमानसः ॥ ११ ॥
ततः समाहितं यावद् ऋतुं तद्वदामि ते ।
तच्छरीरान्महाबाहुः श्यामः कमल लोचनः ॥ १२ ॥
कम्बुग्रीवो व्यूढशीर्षः पूर्णचन्द्रनिभाननः ।
लेखनी कटनीहस्तो मषीभाजन संयुतः ॥ १३ ॥
तेजस्वी पुरुषो धीमान् ब्रह्मणोऽव्यक्त जन्मनः ।

श्यामवर्ण, कमलवत नेत्र ॥ १२ ॥ शंख के तुल्य गर्दन चन्द्रवत मुख, तेजस्वी, अतिबुद्धिमान्, हाथ में कलम और दवायत लिये ॥ १३ ॥ तेजस्वी, बुद्धिमान्,

Digitization by American Academy of Indic Studies (AAIS(USA)

अति सुन्दर विचित्राङ्ग स्थिर नेत्र वाले एक पुरुष अव्यक्त जन्मा ब्रह्मा के शरीर से उत्पन्न हुये ॥ १४ ॥ तब हे गांगेय (भीष्म) ब्रह्माजी समाधि को छोड़ कर सामने स्थिर पुरुष को नीचे ऊपर देखकर ॥ १५ ॥ ब्रह्मा ने पूछा कि हे पुरुषोत्तम !

उत्पन्न स्सुविचित्रांगो ध्यानस्तिमित लोचनः ॥ १४ ॥
त्यक्त्वासमाधिं गांगेयं तं ददर्श पितामहः ।
अधोर्ध्वञ्चनिरीक्ष्येमं पुरुषं चाग्रतः स्थितम् ॥ १५ ॥
पप्रच्छ को भवानग्रे स्थितो वै पुरुषोत्तम ।
इतिपृष्टोऽब्रवीद्वाक्यं ब्रह्माणं कमलोद्भवम् ॥ १६ ॥
उत्पन्नोऽहं विधे नाथ त्वच्छरीरान्नसंशयः ।

आप हमारे सामने स्थित कौन हैं ? ब्रह्मा का यह प्रश्न सुनकर वह पुरुष बोला ॥ १६ ॥ कि हे नाथ ! हे विधि ! मैं आपही के शरीर से उत्पन्न हुआ हूँ

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। हे तात! अब आप मेरा नामकरण करने योग्य हैं
चि सो करिये और मेरे करने योग्य कार्य भी कहिये ॥ १७ ॥ यह वाक्य सुनकर

नामधेयं च मे तात कर्त्तुमर्हस्यशेषतः ॥ १७ ॥
यथोचितं भवत्कार्यं तत्त्वं मामनुशासय।
इत्याकर्ण्य ततो ब्रह्मा पुरुषं तं शरीरजम् ॥ १८ ॥
प्रहस्य प्रत्युवाचैन मानन्दित मनस्ततः।
ब्रह्मोवाच ॥ १९ ॥
मच्छरीरात्समुद्भूतस्त स्मात् कायस्थ संज्ञकः।

ब्रह्माजी निजशरीरज पुरुष से ॥ १८ ॥ हँसकर प्रसन्न मन बोले कि ॥ १९ ॥
मेरे शरीर से आप उत्पन्न हुये हो इससे तुम्हारी कायस्थ संज्ञा और चित्रगुप्त

Digitization by American Academy of Indic Studies, AAIS(USA)

तुम्हारा नाम पृथ्वी पर विख्यात होगा ॥ २० ॥ हे वत्स ! धर्मराज के पुर (यमपुरी) में धर्माधर्म विचार के लिये तुम्हारा निश्चल निवास होगा ॥ २१ ॥ हे पुत्र !

चित्रगुप्तेतिनाम्ना तु ख्यातो भुवि भविष्यति ॥ २० ॥
धर्माधर्म विवेकार्थं धर्मराज पुरे शुभे ।
भविष्यति हि भो वत्सनिवासः सुविनिश्चलम् ॥ २१ ॥
निजवर्णोचितं धर्मं पालनीयं यथाविधि ।
प्रजाः सृजस्व भो पुत्र इतिभार समन्वितम् ॥ २२ ॥
तस्मै दत्वा वरं ब्रह्मा तत्रैवान्तरधीयत ॥ २३ ॥

अपने वर्ण में जो उचित धर्म है उसको विधि पूर्वक पालन करो और प्रजा (सन्तान) को उत्पन्न करो ॥ २२ ॥ इस भाँति ब्रह्माजी भार युक्त वर को देकर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)
आप अन्तर्ध्यान हो गये ॥ २३ ॥ श्री पुलस्त्यजी ने कहा कि हे कुरुवंश के बृद्धि करने वाले भीष्म ! चित्रगुप्त से जो प्रजा उत्पन्न हुई है उनका वर्णन करता हूँ

पुलस्त्य उवाच ।

चित्रगुप्तात्प्रजाजाता शृणु तां कथयामिति ।
शृणु तेषां च नामानि कुरुवंशविवर्द्धन ॥ २४ ॥
गौडाख्या माथुरा श्चैव भटनागरसेनकाः ।
अहिगणः श्रीवास्तव्यः अम्बष्ठा करणास्तथा ॥ २५ ॥
अपरे चाभवन् पुत्रा श्चित्रगुप्तान्महामते ।

सुनो ॥ २४ ॥ गौड, माथुर, भट नागर, सेनक, अहिगण, श्रीवास्तव्य, अम्बष्ठ, करण ॥ २५ ॥ हे महामते ! और भी चित्रगुप्त से उत्पन्न अम्बष्ठादिक पुत्र सब

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

समस्त शास्त्रों में निपुण उत्पन्न हुये ॥ २६ ॥ तब चित्रगुप्त ने पुत्रों को पृथ्वी पर भेजा और धर्माधर्म के जानने वाले महामति चित्रगुप्त ने ॥ २७ ॥ धर्म साधन की

कुशलाः सर्वशास्त्रेषुह्यम्बष्ठाद्याश्च सत्तमाः ॥ २६ ॥
पुत्रान्प्रस्थापयामास चित्रगुप्तो महीतले ।
धर्माधर्मविचारज्ञ श्चित्रगुप्तो महामतिः ॥ २७ ॥
भूयस्तान् शिक्षयामास धर्मसाधन मुत्तमम् ।
पूजनं देवतानां च पितृणां यज्ञसाधनम् ॥ २८ ॥
भरणं ब्राह्मणानां च सर्वदा तिथिसेवनम् ॥ २९ ॥

शिक्षा दी कि देवताओं का पूजन, पितरों का श्राद्ध तर्पण ॥ २८ ॥ ब्राह्मणों का पालन-पोषण और अभ्यागतों की सेवा यत्न पूर्वक सदैव करना ॥ २९ ॥ हे

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

पुत्रों ! तीनों लोकों के हित के लिये यत्न करना और स्वर्ग की कामना करके महिषमर्दिनी देवी का पूजन अवश्य करना ॥ ३० ॥ जो माया प्रकृति रूप और चण्ड के नाश करने वाली तथा समस्त सिद्धियों को देने वाली देवी है उसका

कर्तव्यं हि प्रयत्नेन लोकत्रय हिताय वै ।
हे पुत्राः स्वर्गकामाय पूज्या महिषमर्दिनी ॥ ३० ॥
या माया प्रकृतिश्चण्डीचंडमुंड विनाशिनी ।
तस्यास्तु पूजनं कार्यं सर्वसिद्धि प्रदायकम् ॥ ३१ ॥
तस्याः प्रभावतो देवाः सिद्धिं प्राप्यदिवंगताः ।
स्वर्गाधिकार मासाद्य जातायज्ञभुजः सदा ॥ ३२ ॥

पूजन करना ॥ ३१ ॥ जिसके प्रभाव से देवता लोग सिद्धियों को पाकर स्वर्गलोक को गये और स्वर्ग के अधिकार को प्राप्य सदैव यज्ञ में भाग लेने वाले हुए ॥ ३२ ॥

पाकर

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उस देवी के अर्थ तुम सब लोग उत्तम मिष्टान्नादि (पकवान) को समर्पण करो जिससे वह चण्डिका देवताओं की भाँति तुमको भी सिद्धि देने वाली होय ॥ ३३ ॥ और वैष्णव धर्म का अवलम्बन करके मेरे वाक्य का प्रतिपालन करो, यह आज्ञा

भवद्भिः सा सुपूज्या तु मिष्टान्नैः सुमनोहरैः ।
भवतां सिद्धिदा यस्मात् देवतानां च चण्डिका ॥ ३३ ॥
वैष्णवं धर्ममा श्रित्य मद्वाक्यं प्रतिपालय ।
अनुशास्य सुतानेवं चित्रगुप्तो दिवं ययौ ॥ ३४ ॥
धर्मराजाधिकारे च चित्रगुप्तः सदावसत् ।

पुत्रों को चित्रगुप्तजी देकर आप स्वर्ग को चले गये ॥ ३४ ॥ चित्रगुप्तजी स्वर्ग में जाकर धर्मराज के अधिकार में सदैव स्थित हुए । हे भीष्म ! इस भाँति चित्रगुप्त के

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

उत्पत्ति की व्यवस्था है सोई मैंने आपसे कही ॥ ३५ ॥ अब मैं उन लोगों का विचित्र इतिहास ॥ ३६ ॥ और चित्रगुप्त का जैसा प्रभाव उत्पन्न हुआ सो भी

एवं भीष्म समुत्पन्नाः कायस्था ये प्रकीर्तिताः ॥ ३५ ॥
ये सृष्टास्तेसमाख्याताः संवादं शृणु यत्परम् ॥ ३६ ॥
अहं ते कथयिष्यामि विचित्रमिति हासकम् ।
प्रभावः चित्रगुप्तस्य समुद्भूतं यथापुनः ॥ ३७ ॥

पुलस्त्यउवाच ।

सौदासो नाम राजाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले ।
सदा पापरतः सो पि धर्माधर्मं न विन्दति ॥ ३८ ॥

कहता हूं ॥ ३७ ॥ श्रीपुलस्त्यजी बोले कि, धर्माधर्म को न जानता हुआ नित्य पाप कर्म में रत पृथ्वी का सौदास नामक राजा हुआ ॥ ३८ ॥ वह पापी दुराचारी धर्म

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कर्म से रहित जिस प्रकार स्वर्ग में जाके पुण्य के फल को भोग किया सो वह कथा सुनो ॥ ३९ ॥ राजनीति को न जानता हुआ राजा निज राज्य में मुनादी क-

स यथास्वर्ग मासाद्य लब्धं पुण्यफलं शृणु ।
सहिपापोदुराचारा धर्मकार्य विवर्जितः ॥ ३९ ॥
राजनीति गतं धर्मं न जानाति कथंचन ।
स्वदेशे वादयामास पटहं स नराधिपः ॥ ४० ॥
न दातव्यं न कर्तव्यं दैवं पैत्र्यं कथंचन ।
आतिथ्यं जपकर्माणि तपः साधनमुत्तमम् ॥ ४१ ॥
न कर्तव्यं नरैः क्वापिमत्पालित महीतले ॥ ४२ ॥

ढिढोरा पिटवा दिया ॥ ४० ॥ कि दान धर्म हवन श्राद्ध तर्पण अतिथियों का सत्कार जप नेम और तपस्या का साधन मेरे राज्य में कोई न करै ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

देवीकी भक्ति में तत्पर वहाँ के निवासी ब्राह्मण लोग उस सौदास राजा का ब्राह्मणादिक वहां रहगये वह यज्ञ, हवन, श्राद्ध और तर्पण कभी नहीं करते थे ॥ ४४ ॥

वसंति ये तस्य चक्रे देव्यादिषु रता द्विजाः ।
परित्यज्य स्वकं देशं नानादेशान्तरं गताः ॥ ४३ ॥
ये केचिन्न्यवसन् चक्रे चान्ये वा ब्राह्मणादयः ।
नैव यज्ञं प्रकुर्युस्ते दैवं पित्र्यं कदाचन ॥ ४४ ॥
ततःप्रभृति गाङ्गेय न यज्ञो हवनं क्वचित् ।
न कोपि कुरुते भीष्म पुण्यं तस्माद् वहिर्गतम् ॥४५॥

हे गांगेय ! (भीष्म !) तबसे उस राज्य में कोई कहीं पर यज्ञ हवनादि पुण्य कर्म नहीं करता था । हे भीष्म ! उस देशसे पुण्य बाहर चला गया ॥ ४५ ॥ ब्राह्मणादि और अन्यवर्ण के लोग धर्म को नाश करने लगे । अब आप उस दुष्ट राजा के कर्म

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

विपाक को सुनो ॥ ४६ ॥ कार्तिक शुक्लपक्षकी द्वितीया आदि उत्तम तिथिको पवित्र होकर कायस्थ लोग चित्रगुप्तका पूजन ॥ ४७ ॥ भक्ति भाव से परिपूर्ण सुन्दर धूप

ते द्विजाश्चान्यवर्णाश्च चक्रिरे धर्मविप्लवम् ।
अहो भूमिभृतस्तस्य शृणु कर्मविपाकजम् ॥ ४६ ॥
कार्तिके शुक्लपक्षे तु द्वितीयायाम्मुदातिथौ ।
शुचिर्भूत्वा तु कायस्थाः चित्रगुप्तस्य पूजनम् ॥ ४७ ॥
चक्रिरे भक्तिभावेन धूपदीपादिकैः शुभैः ।
दैवात् पप्रच्छ कस्येदं पूजनं क्रियते शुभम् ॥ ४८ ॥
तेप्यूचुश्चित्रगुप्तस्य पूजां कुर्मः शुभां नृप ॥ ४९ ॥

दीपादिसे करते थे । दैववश सौदास राजा भी पृथ्वी पर घूमता हुआ वहाँ पहुँचा ॥४८॥ और पूजन देखकर पूछने लगा कि यह पूजन किसका करते हो ? वह लोग बोले कि हे राजन् ! चित्रगुप्त की यह शुभ पूजा करते हैं ॥ ४९ ॥ यह सुन राजा ने कहा

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कि मैं भी चित्रगुप्तकी पूजा करूँगा यह कह विधियुक्त स्नान करके ॥ ५० ॥ श्रद्धायुक्त मनसे चित्रगुप्तकी पूजा किया तो उस भक्तियुक्त पूजन के करने से ॥ ५१ ॥ उसी क्षण

राजोवाच ।

अहम् प्याचरिष्यामि चित्रगुप्तस्य पूजनम् ।
ततश्चविधिवत्स्नानं कृत्वा चैव नराधिपः ॥ ५० ॥
श्रद्धा युक्तेन मनसा कृतवान् पूजनं ततः ।
करणात् पूजनं तस्य चित्रगुप्तस्य भक्तितः ॥ ५१ ॥
गतपापोऽभवत्सद्यः, सौदासः स महीपतिः ।
चित्रगुप्त प्रसादेन सुरलोकं गतो नृपः ॥ ५२ ॥

पाप रहित होकर वह सौदास राजा स्वर्ग लोक को गया ॥ ५२ ॥ यह विचित्र चित्रगुप्त के प्रभाववाला इतिहास मैंने आपसे कहा अब हे नृपश्रेष्ठ! तुम्हारी क्या सुनने की

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

इच्छा है ? ॥ ५३ ॥ यह सुनकर भीष्मजी महर्षि पुलस्त्यजी जी से बोले कि हे विप्रेन्द्र ! किस विधिसे वहाँ उसने पूजन किया ॥ ५४ ॥ हे प्रभो ! और कौनसी विधि है जिसके

इदं विचित्रमाख्यानं चित्रगुप्त प्रभावजम् ।
कथितं ते नृप श्रेष्ठ किमन्यच्छ्रोतु मिच्छसि ॥ ५३ ॥
इत्याकर्ण्य ततो भीष्मः प्रत्युवाच महामुनिम् ।

भीष्मउवाच ।

विधिना केन विप्रेन्द्र पूजां तत्र चकार सः ॥ ५४ ॥
को मन्त्रः को विधिस्तत्र तत्सर्वं कथय प्रभो ।
यमासाद्य मुनिश्रेष्ठ सौदासः स्वर्गमाप्नुयात् ॥ ५५ ॥

प्रभावसे हे मुनिश्रेष्ठ ! सौदास राजा स्वर्गको गया ॥ ५५ ॥ श्रीपुलस्त्य जी बोले कि हे भीष्म ! चित्रगुप्त के पूजन की विधि मैं आपसे कहता हूँ घृत से बने नैवेद्य और

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

ऋतुफल ॥ ५६ ॥ चन्दन, पुष्प, धूप, दीप अनेक प्रकारके नैवेद्य और रेशमी वस्त्र से पूजन करके ॥ ५७ ॥ भेरी शंख मृदङ्ग, डिमडिम और भी अनेक बाजे बजाकर

पुलस्त्य उवाच ।

नैवेद्यै र्घृतपक्वैश्च तथाकालोद्भवैः फलैः ॥ ५६ ॥
गन्ध पुष्पोपहारैश्च धूपदीपै स्तथोत्तमैः ।
नानाप्रकार नैवेद्यैः पट्टवस्त्रैः सुशोभनैः ॥ ५७ ॥
भेरी शंख मृदंगैश्च नानावाद्यैर्डिमडिमैः ।
चित्रगुप्तस्य पूजान्तुकुर्याद् भक्तिसमन्वितः ॥ ५८ ॥
कलशं नवमानीय वारिणा परिपूरितम् ।

भक्तियुक्त श्रीचित्रगुप्त का पूजन करे ॥ ५८ ॥ हे विद्वन् ! जलसे परिपूर्ण नवीन कलश

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

लाकर उसके ऊपर शक्कर से भरा एक कसोरा (परई) रखे ॥ ५९ ॥ यत्न पूर्वक पूजनके समय ब्राह्मण को दान देवे ॥ ६० ॥ पूजन का मंत्र यह है दवायत कलम और खल्ली

शर्करापूरितं विद्धन् पात्रं तस्योपरि स्थितम् ॥ ५९ ॥
पूजाकाले प्रयत्नेन दातव्यं च द्विजन्मने ॥ ६० ॥

तत्रमन्त्रः ।

मसीभाजन संयुक्त श्चरसि त्वं महीतले ।
लेखनी कटिनी हस्त चित्रगुप्त नमोस्तुते ॥ ६१ ॥
चित्रगुप्त नमस्तुभ्यं लेखकाक्षर दायकम् ।

हाथमें लेकर पृथ्वी पर घूमने वाले हे चित्रगुप्त ! आपको नमस्कार है ॥ ६१ ॥ २२
हे चित्रगुप्त ! कायस्थ जाति के लेखकों को अक्षर देनेवाले आप को बार बार

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

नमस्कार है ॥ ६२ ॥ जिनको आपने लिखने की जीविका बनाकर पालन करते हैं इस लिये मुझे शान्ति दीजिये ॥ ६३ ॥ हे राजेन्द्र ! इन पूर्वोक्त मंत्रों से संकल्प पूर्वक हे

कायस्थ जातिमासाद्य चित्रगुप्त नमोस्तुते ॥ ६२ ॥
येषां त्वया लेखनस्य जीविकाय येन निर्मिता ।
तेषां च पालकोयस्मात्ततः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥६३॥
एभिर्मन्त्रैस्तु राजेन्द्र चित्रगुप्तस्य पूजनम् ।
संकल्पपूर्वकं कुर्यात् कुरुवंश विवर्द्धन ॥ ६४ ॥
एवंसंपूज्य विधिवत्सौदासो भक्ति भावतः ।

कुरुवंश के बढ़ाने वाले भीष्म ! चित्रगुप्त का पूजन करना चाहिये ॥ ६४ ॥ इस भाँति सौदास राजा भक्ति भावसे पूजन करके निज राज्यको करते हुये वह थोड़ेही काल बाद

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

मृत्युको प्राप्त हुआ ॥ ६५ ॥ हे भारत ! उसी क्षण यमदूत उस राजा को भयानक यमलोक में ले गये । तब चित्रगुप्त से यमराजने पूछा कि ॥ ६६ ॥ यह दुराचारी पाप

अचिरेणैव कालेन राज्यं कृत्वा मृतो नृपः ॥ ६५ ॥
नीतो सौ यमदूतस्तु यमलोकं भयानकम् ।
चित्रगुप्तं तदाऽपृच्छद् यमराजश्च यभारत ॥ ६६ ॥
धर्मराजोवाच।
सौदासोऽयं दुराचारः पापकर्मरतः सदा ।
अनेन स्वप्रजाभ्यश्च पापं कारितं वांस्तथा ॥ ६७ ॥

कर्म में रत, सौदास राजा है जिसने अपनी प्रजा से पाप कर्म करवाया है ॥ ६७ ॥ जब इस भाँति धर्मराज ने पूछा तब धर्माधर्म के जानने वाले महामति चित्रगुप्तजी हँसकर उस

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

राजा के कर्म विपाक युक्त शुभ बचन बोले ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ हे सौरे ! सूर्य पुत्र यह राजा यद्यपि पाप कर्म करने वाला पृथ्वी में प्रसिद्ध है और मैं आपकी प्रसन्नता से पृथ्वी

पृष्टोऽसौ धर्मराजेन धर्माधर्म्म विशारदः ।
धर्मराजंतदा प्राह चित्रगुप्तो महामतिः ॥ ६८ ॥
विपाकं कर्मजं ज्ञात्वा तं प्रहस्य शुभं वचः ॥ ६९ ॥
पापकर्मण्ययं राजा ख्यातो यदपि भूतले ।
त्वत्प्रसादादहं सौरे पूज्योहं वसुधातले ॥ ७० ॥
त्वया दत्तवरः स्वामिन् शिवम्भूयान्नमोस्तुते ।

में पूज्य हूँ ॥ ७० ॥ हे स्वामिन् ! आपही ने यह वर दिया है । आपका सदैव कल्याण हो, आपको नमस्कार है । हे देव ! आप भली भाँति जानते हैं और मेरी भी मति है

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कि यह राजा पापी है ॥ ७१ ॥ तो भी इस राजा ने भक्ति भाव युक्त मेरी पूजा की है इससे मैं इसपर प्रसन्न हूँ। हे देव! अतः यह राजा वैकुण्ठ लोक को जाय ॥ ७२ ॥

भवान् जानात्विदं देव! राजा पापोस्तिमेमतिः ॥ ७१ ॥
पूजां चकार राजासौ भक्तिभावेन मामकीम् ।
अतस्तुष्टोस्मि हे देव यातु विष्णुपदं नृपः ॥ ७२ ॥
यमेनाज्ञापितो राजा वैष्णवंपदमाविशत् ॥ ७३ ॥

पुलस्त्यउवाच ।

येचान्ये पूजयिष्यन्ति चित्रगुप्तं महीतले ।

यह वचन चित्रगुप्त का सुनकर यमराज ने राजा, सौदास को वैकुण्ठ जाने की आज्ञा दी और राजा सौदास वैकुण्ठ चला गया ॥ ७३ ॥ श्रीपुलस्त्यजी ने कहा कि हे भीष्म! जो

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

कोई दूसरा पुरुष या कायस्थ चित्रगुप्त की पूजा करेगा वह पापसे छूटकर परमगति पावेगा ॥ ७४ ॥ इस कारण हे गांगेय तुम भी चित्रगुप्त की विधि युक्त पूजा करो

कायस्था वाऽघनिर्मुक्ता यास्यन्ति परमांगतिम् ॥ ७४ ॥
तस्मात्त्वमपि गांगेय पूजां कुरु विधानतः ।
राजेन्द्र दुर्लभं लोकं कृत्वा पूजामवाप्स्यसि ॥ ७५ ॥
मुनेर्वचनमाकर्ण्य भीष्मः प्रहृत मानसः ।
चकार पूजनं तत्र चित्रगुप्तस्य भक्तितः ॥ ७६ ॥
कार्तिके शुक्लपक्षस्य द्वितीयायां च भारत ।

जिस पूजाके करने से हे राजेन्द्र ! दुर्लभ लोक को भी प्राप्त करोगे ॥ ७५ ॥ यह पुलस्त्य के वचन सुनकर भीष्म जीने भक्तियुक्त मनसे चित्रगुप्त की पूजा की ॥ ७६ ॥ कार्तिक

शुक्ल पक्ष की द्वितीया के दिन

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

को दक्षिणा देवे और कायस्थ लोग बहिन के घर में चित्रगुप्त का पूजन ॥ ८० ॥ चित्र विचित्र वर्ण के पुष्पोंसे और रक्त चन्दन काले धतूरेके पुष्प व शमीके पत्ते से पूजन

काले तत्रैव संपूज्य चित्रगुप्तं च लेखकः ॥ ८० ॥
चित्रैश्च रक्तपुष्पैश्च रक्तचन्दन मिश्रितैः ।
कृष्णोन्मत्तक पुष्पैश्च शमीपत्रै र्विशेषतः ॥ ८१ ॥
नैवेद्यं चैव दातव्यो मोदकं गुड मिश्रितम् ॥ ८२ ॥
पूजामन्त्रः ।
शान्तिदः प्रलयं चैव भोगाभोगकृताकृते ।

करके ॥८१॥ गुड़मिश्रित लड्डूका नैवेद्य लगावे ॥८२॥ पूजन का यह मंत्र है । भोग और अभोग किया हुआ, न किया हुआ जो प्रलय है उस समय आप सुख देनेवाले हैं चित्रगुप्त !

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

शुक्लपक्ष द्वितीया को निज भगिनी (बहिन) यमुना के घर यमराज ने भोजन किया ।।७७।। इस कारण लोक में इसका यमद्वितीया नाम हुआ और आयुष्य के बढ़ाने वाला वर यमुना ने

यमुनाया गृहे यस्मात् यमेन भोजनं कृतम् ॥ ७७ ॥
अतो यमद्वितीयेति लोके संज्ञां जगाम ह ।
वरं दत्तं भगिन्या तु भ्रात्रे चायुर्विवर्द्धनम् ॥ ७८ ॥
अतो भगिनीहस्तेन तिथावस्यां च भोजनम् ।
धनं यशस्यमायुष्यं वर्द्धते कामसाधनम् ॥ ७९ ॥
स्वशक्त्या चैव दातव्यं भगिन्यैव विधानतः ।

यमराजको दिया ।। ७८ ।। इससे इस तिथिमें बहिन के हाथ का भोजन करने से धन, यश, आयुष्य भली भांति बढ़ते हैं ।। ७९ ।। इस तिथि में स्वशक्ति के अनुसार भगिनी

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

आपको नमस्कार है ॥ ८३ ॥ समुद्रमथन के समय लक्ष्मी के साथ उत्पन्न होने वाले हे चित्रगुप्त ! हे महाबाहो ! मेरे आयुष्यको बढ़ाओ ॥ ८४ ॥ इस भाँति पूजन करने से

लेखकानां सदा श्रीद श्चित्रगुप्त नमो ऽस्तु ते ॥ ८३ ॥
श्रिया सह समुत्पन्नः समुद्रमथने कृते ।
चित्रगुप्त महाबाहो ममायुर्वरदो भव ॥ ८४ ॥
चित्रगुप्तस्तु संतुष्टो भीष्माय प्रददे वरम् ।
मत्प्रसादान्महाबाहो मृत्युस्ते न भविष्यति ॥ ८५ ॥
स्मरिष्यसि यदा मृत्युं तदा मृत्युर्भविष्यति ।

प्रसन्न होकर भीष्म को चित्रगुप्त जी ने वर दिया कि हे महाबाहो ! मेरे प्रसाद से तुम्हारी मृत्यु न होवेगी ॥ ८५ ॥ जिस समय तुम मृत्युको स्मरण करोगे उस समय

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

तुम्हारी मृत्यु होगी यह वर देकर चित्रगुप्त स्वर्ग को चले गये ॥ ८६ ॥ बुद्धिमान् पुरुष इस विधिसे चित्रगुप्त की पूजा करेंगे उन का फल सुनो ॥ ८७ ॥ इस लोकमें

इति तस्मै वरं दत्वा चित्रगुप्तो दिवं ययौ ॥ ८६ ॥
अनेन विधिना यस्तु चित्रगुप्तस्य पूजनम् ।
करिष्यति महाप्राज्ञ तस्य पूजाफलं शृणु ॥ ८७ ॥
इहैव विपुलान् भोगान् भुक्त्वा चैव मनोहरान् ।
अव्ययं वैष्णवं लोकं नरो याति न संशयः ॥ ८८ ॥
चित्रगुप्त कथां दिव्यां कायस्थोत्पत्तिकारिणीम् ।

अनेक प्रकार के बड़े-बड़े सुख भोग करके मनुष्य अनाशवान् विष्णुलोक को निस्सन्देह जावेंगे ॥ ८८ ॥ कायस्थों की उत्पत्तिका कारण श्री चित्रगुप्त की कथा जो श्रेष्ठ

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

भक्तियुक्त मनसे सुनेंगे ॥ ८९ ॥ वे पुरुष समस्त व्याधियों से छूटकर दीर्घायु होवेंगे और अन्त में (मरनेपर) जहाँ तपस्वी लोग जाते हैं ऐसे विष्णुलोक को निःसंदेह जावेंगे ॥ ९० ॥

भक्तियुक्तेन मनसा ये शृण्वन्तिनरोत्तमाः ॥ ८९ ॥
दीर्घायुषो भविष्यन्ति सर्वव्याधि विवर्जिताः ।
मृतो विष्णुपदं यान्ति यत्र यान्ति तपोधनाः ॥ ९० ॥

इति श्रीपद्मपुराणान्तर्गते उत्तरखण्डे
चित्रगुप्त यमद्वितीयाकथा समाप्ता ।

इति श्रीउमाप्रान्तस्थ नरौराग्राम निवासी पं० आनंद माधव दीक्षितात्मज
पं० [illegible] दीक्षितेन कृत भाषाटीकायां चित्रगुप्त
यमद्वितीया कथा भाषाटीका समाप्ता ।

श्री विश्वेश्वर प्रेस, काशी में मुद्रित ।

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

गौरीशङ्कर मिश्रकृता

'देवकाणी' वेद भाषा दीपिकासहिता

समाप्ता

Digitization by American Academy of Indic Studies. AAIS(USA)

हमारे यहाँ की छपी हुई पुस्तकें

दशकर्म पद्धति भाषा टीका	१॥)
प्रेत मंजरी भाषा टीका ग्लेज बड़ा	२)
दुर्गा भाषा टीका	३)
मूल शान्ति	॥=)
बगला मुखी स्तोत्र	॥)

और भी अन्यान्य पुस्तकें यहाँ मिलती हैं।

पुस्तक मिलने का पता—

बाबू बैजनाथ प्रसाद बुक्सेलर, राजादरवाजा बनारस सिटी।

श्री विश्वेश्वर प्रेस, काशी में मुद्रित।